

**Curriculum and Credit Framework  
As per NEP 2020**

**For**

**Program name Undergraduate  
Sanskrit(Multidisciplinary)  
(To be effective from the Academic Session2024-2027)**



**Department of Indian knowledge and language  
Gurugram University, Gurugram**

(A State Govt. University Established Under Haryana Act  
17 Of 2017)

## बी०ए (संस्कृत) पृष्ठभूमि

गुरुग्राम विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग बहुमुखी संकाय के रूप में सक्रिय भूमिका निभा रहा है विभाग का उद्देश्य विद्यार्थियों की वैश्विक स्तर पर हर क्षेत्र में बढ़ती संस्कृत की महत्ता से परिचित कराते हुए उन्हें भाषा, साहित्यक मूल्यों और भारतीय संस्कृति के ज्ञान एवं योग्यता के साथ उनका सर्वांगीण विकास करना है। विभाग के प्राध्यापक समर्पित एवं अनुभवी शिक्षाविद् हैं जो विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। विद्यार्थियों के अकादमी प्रगति के साथ उनकी रुचि, व्यक्तित्व विकास और भविष्योन्मुखी योजनाओं को लेकर व्यक्तिगत रूप से उनका मार्गदर्शन करते हैं। संस्कृत पाठ्यक्रम की संरचना और स्वरूप विद्यार्थी के समग्र विकास को उद्धृत करने एवं संस्कृत को रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए व्यवसायिक एवं संचार कौशल, अनुवाद, व्यक्तित्व विकास, शोध अभिव्यक्ति कौशल पत्रकारिता सृजनात्मक लेखन, भाषा विज्ञान एवं कार्यालयी संस्कृत आदि विषयों के विशिष्ट ध्येय को ध्यान में रखकर बनाया गया है संस्कृत से स्नातक करने के साथ इस विषय में विद्यार्थी स्नातक शिक्षण प्रशिक्षण, जनसंचार, पटकथा, संवाद लेखन, अनुवाद, लोक प्रशासन एवं राजभाषा जैसे आकर्षक क्षेत्रों में शिक्षा एवं रोजगार के अवसर चुन सकते हैं सीखने की प्रक्रिया जीवन पर्यंत से सक्रिय है एवं सतत विकास की धारणा पर हमारा विभाग कार्यरत है संस्कृत विभाग के द्वारा समय समय पर सम्मेलनों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं संस्कृत श्लोकोच्चारण

का आयोजन भी किया जाता है संस्कृत विभाग का प्रथम उद्देश्य ज्ञान परंपरा की गहराइयों में उतरना, अतीत को वर्तमान से जोड़ना और मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाले प्रत्येक चीजों

# का अध्ययन करना और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं उनके उन्नयन एवं उनके उन्नयन का प्रयास करना है।

## ABOUT THE PROGRAM

बीए संस्कृत भारतीय भाषा का एक महत्वपूर्ण स्नातक स्तरीय अध्ययन प्रोग्राम है जिसका उद्देश्य है छात्रों को संस्कृत साहित्य एवं सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के ज्ञान से अवगत कराना है इस लेख में हम बीए (संस्कृत) कोर्स के बारे में विस्तृत जानकारी देंगे जो विद्यार्थियों को इस प्रोग्राम के बारे में अधिक संक्षेप में पता करने में मदद करेगी

### 1. Programme Educational Objectives (PEOs)

PEO	Description
PEO-1	विद्यार्थी संस्कृत में व्याकरण का शुद्ध मौखिक एवं लिखित सम्प्रेषण कर सकेंगे
PEO-2	इस प्रोग्राम में विद्यार्थी संस्कृत साहित्य की वेद, वेदांग, उपनिषद एवं व्याकरण के इतिहास और इसकी प्रतिनिधिक रचनाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
PEO-3	विद्यार्थी भाषा सम्प्रेषण में संस्कृत का प्रयोग कर सकेंगे।

### 2. Programme Outcomes

PO	Description
PO-1	विद्यार्थियों को लेखन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।
PO-2	इस प्रोग्राम द्वारा विद्यार्थियों के करियर में उन्नति हो सकती है।
PO-3	सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत पारंगता प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।
PO-4	विद्यार्थी विषय का गहन अध्ययन कर विषय विशेष का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
PO-5	आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगे
PO-6	नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान व्यक्तिवादी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिकता के रूप में भावी चुनौतियों का सामना भी करने में सक्षम होंगे।
PO-7	यह प्रोग्राम विद्यार्थी को भविष्य में आत्मनिर्भर बना सकता है।
PO-8	विद्यार्थी संस्कृत भाषा में लिखित कथा साहित्य की विशेषता एवं उनमें निहित नैतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

### 3. Programme Specific Outcomes

PSO	Description
PSO-1	संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण इत्यादि) में अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
PSO-2	धर्मदर्शन, आचार व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान एवं कुशल नागरिक होंगे।
PSO-3	सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में प्राचीन महत्त्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने समझने योग्य होंगे।
PSO-4	आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, नित्य नैमित्तिक कर्मकांड इत्यादि के माध्यम से जीविका उपार्जन के योग्य होंगे।
PSO-5	वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य की समृद्धता एवं तदनिहित नैतिकता व आध्यात्मिकता को अनुभूत कर भारतीय संस्कृति के महत्त्व को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने में सक्षम होंगे।

### स्नातक विशेषताएँ

\*अनुशासनात्मक ज्ञान।

\*रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच।

\*विचारात्मक चिंतन।

\*समस्या समाधान।

\*विश्लेषणात्मक तर्क।

\*संचार कौशल।

\*अनुसंधान कौशल।

\*जीवन कौशल।

\*नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य।

\*वैश्विक क्षमता।

\*बहुसांस्कृतिक क्षमता।

### योग्यता वर्णनकर्ता (Qualification description)

\*बी०ए० संस्कृत कार्यक्रम में योग्यता वर्णनकर्ता उन अपेक्षित ज्ञान, कौशल और दक्षताओं का वर्णन करते हैं जो विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद प्राप्त होने चाहिए। ये वर्णन करता सुनिश्चित

करते हैं कि विद्यार्थी संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में विभिन्न पेशेवर और शैक्षणिक अवसरों के लिए अच्छी तरह से तैयार है।

\*बी०ए० सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्कृत भाषा की उन्नत समझ का प्रदर्शन करेगा जिसमें व्याकरण, वाक्य रचना, ध्वनि विज्ञान, भाषा विज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान तथा मौखिक संवाद योजना शामिल है इसमें वैदिक महाकाव्य शास्त्रीय और आधुनिक संस्कृत साहित्य का व्यापक ज्ञान भी शामिल होगा। संस्कृत साहित्य की सांस्कृतिक ऐतिहासिक और दार्शनिक संदर्भों को समझना भी इसका एक हिस्सा होगा।

\*बी०ए० संस्कृत कार्यक्रम व्यापक संस्कृत के आलोचनात्मक विश्लेषण और व्याख्या करेगा जिसमें उपयुक्त विद्वत्तापूर्ण पद्धतियों का उपयोग किया जाएगा। विभिन्न साहित्यिक और दार्शनिक पद्धतियों और परंपराओं का मूल्यांकन और तुलना भारतीय बौद्धिक इतिहास के व्यापक संदर्भ में किया जाएगा। स्वतंत्र अनुसंधान करना, शोध प्रश्नों को तैयार करना और प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना भी इसके अंतर्गत आता है।

\*बी०ए० संस्कृत कार्यक्रम संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए लिखने, बोलने में प्रवीणता का प्रदर्शन करेगा गद्यों का अनुवाद और व्याख्या सही तरीके से करना भाषाई सूक्ष्मताओं और सांस्कृतिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए साहित्य एवं दर्शन से संबंधित विषयों पर विद्वत्तापूर्ण पत्र, रिपोर्ट और प्रस्तुतियां तैयार करना और प्रस्तुत करना भी इसका एकमात्र हिस्सा होगा।

\*बी०ए० संस्कृत कार्यक्रम में प्रभावी संचार कौशल दोनों लिखित और मौखिक अकादमी को और पेशेवर संदर्भों के लिये उपयुक्त होंगे। अनुसंधान और शैक्षणिक सेटिंग्स में स्वतंत्र और सहयोगात्मक कार्य करने की क्षमता का प्रदर्शन भी किया जाएगा। संस्कृत ज्ञान के अध्ययन और प्रसार में नैतिक सिद्धांतों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता का अनुप्रयोग भी होगा। विभिन्न पेशेवर संदर्भों में हस्तांतरणीय महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान और बाधक अन्वेषण में कौशल का विकास करना भी इसका हिस्सा होगा।

\*बी०ए० संस्कृत कार्यक्रम संस्कृत साहित्य में आजीवन रुचि और प्रशंसा को बढ़ावा देगा। संस्कृत साहित्य में संरक्षित भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत की सूक्ष्म समझ को विकसित करेगा, अपने स्वयं के सीखने और विद्वत्ता के प्रति चिंतनशील और आत्म आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास भी करेगा। अकादमिक और पेशेवर चुनौतियों के सामने अनुकूलता और लचीलापन का प्रदर्शन करना भी इसका मूल ध्येय है।

\* योग्यता (Eligibility)

उम्मीदवार को किसी भी विषय में उच्चतर माध्यमिक का प्रमाणपत्र होना चाहिए, जिसमें कुल मिलाकर कम से कम 45% अंक केवल हरियाणा के sc/st/ दिव्यांग उम्मीदवारों के मामले में 42.75% अंक होने चाहिये।

करियर के अवसर (Scheme of subject )(With course ID)

\*दुनिया भर में हमारी संस्कृत भाषा को महत्वपूर्ण महत्त्व स्थान दिए जाने के कारण इसमें रोजगार के कई अवसर हैं संस्कृत साहित्य में कुछ नौकरियां निम्नलिखित हैं जो आपके लिए मददगार हो सकती हैं

- (1) भारतीय सेना में धर्माधिकारी की नियुक्ति में सहायक ।
- (2) समाज में धार्मिक कार्यों के लिए संस्कृत भाषा की आवश्यकता।
- (3) विभिन्न धार्मिक स्थलों के लिए धर्मगुरु पुजारी हेतु।
- (4) पत्रकारिता, रेडियो, जन संचार माध्यमों में संस्कृत भाषा में रोजगार के अवसर।
- (5) संस्कृत अनुवादक, शोधकर्ता तथा अभिलेख एवं पांडुलिपी क्षेत्र में रोजगार के अवसर।
- (6) योग शिक्षक के रूप में संस्कृत में रोजगार के अवसर।
- (7) आयुर्वेद चिकित्सा, वास्तु-सलाहकार के रूप में भी संस्कृत में रोजगार के अवसर।
- (8) कथा वाचक एवं उपदेशक के रूप में संस्कृत में रोजगार के अवसर।

**BA Sanskrit (Multidisciplinary)**  
Scheme of Programme  
**(Scheme UG A1: Undergraduate Programmes)**

**Semester 1**

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Total Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
<b>Core Course(s)</b>														
CC-A1	संस्कृत पद्य साहित्य	240/S KTM/CC101	3	1		3	1		4	30	70			100

**Semester 2**

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
<b>Core Course(s)</b>														
CC-A2	संस्कृत का नाट्य साहित्य	240/S KTM/CC202	3	1		3	1		4	30	70			100

**Semester 3**

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
<b>Core Course(s)</b>														
CC-A3	संस्कृत गद्य साहित्य	240/S KTM/CC303	3	1		3	1		4	30	70			100

**Semester 4**

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
<b>Core Course(s)</b>														
CC-A4	संस्कृत का कथा साहित्य	240/S KTM/C404	3	1		3	1		4	30	70			100

**Semester 5**

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
<b>Core Course(s)</b>														
CC-A5	संस्कृत साहित्य का इतिहास	240/S KTM/ CC50 5	3	1		3	1		4	30	70			100

Internship is to be done during summer break after 4<sup>th</sup> Semester, Marks will be added in 5<sup>th</sup> Semester.

#### Semester 6

Course Code	Course Title	Course ID	L	T	P	L	T	P	Credits	MARKS				
			(Hrs)			Credits				TI	TE	PI	PE	Total
<b>Core Course(s)</b>														
CC-A6	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय	240/SK TM/CC 606	3	1		3	1		4	30	70			100

*The curriculum of semester 7 and 8 will be provided in due course of time.*

## CC-A1- संस्कृतपद्य साहित्य

पूर्णांक-70+30=100

course ID- 240/SKT/CC101

### अधिगम उपलब्धि :-

1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त करके काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित होंगे। 2. विद्यार्थी संस्कृत पद्य साहित्य की सुगितात्मकता का सौंदर्य बोध कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ-साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सुस्वर उच्चारण के कौशल में निपुणता प्राप्त करेंगे।
4. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग शब्द रूपों का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त पांचो लकारों में धातुओं का ज्ञान प्राप्त होगा।

### अधिगम उद्देश्य:-

1. संस्कृत पद्य साहित्य का इतिहास एवं सामान्य परिचय का ज्ञान कराने हेतू।
2. संस्कृत श्लोक के शुद्ध और सुस्वर उच्चारण कौशल को निखारने हेतू।
3. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त शब्द रूपों एवं धातु रूपों का ज्ञान कराने हेतू।

### पाठ्यक्रम :-

#### इकाई 1

संस्कृत पद्य साहित्य का इतिहास-

-कालिदास

-भारवी

-श्री हर्ष

-माघ

-डॉ० राजेंद्र मिश्र

-सुधीकांत भारद्वाज

#### इकाई 2

रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग (1 स- 40 श्लोक)

#### इकाई 3

रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग (41- 75 श्लोक)

#### इकाई 4

शब्द रूप - बालक, राजन्, फल, लता , अस्मद् , युष्मद्

धातु रूप - पठ्, भू, कृ, गम्, चुर्

#### दिशा -निर्देश:

•सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है। 16

\* इकाई एक में से किन्हीं 4 में से 2 को करें। 10

•इकाई 2 और इकाई 3 से 6 श्लोक में से 3 की सप्रसंग व्याख्या करें। 15

•इकाई 2 और इकाई 3 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न करें। 9

•इकाई 4 में से 4 धातु रूपों में से 2 को करें। (लट् लकार, लृट् लकार, लोट लकार) 12

•इकाई 4 में से 4 शब्द रूप में से 2 करें। 8

#### संदर्भ- ग्रंथ :

\* रघुवंशम्, कालिदास

\* लघु सिद्धांत कौमुदी, आचार्य वरदराज •बृहद् अनुवाद चंद्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री

## CC-A2- संस्कृतकानाट्यसाहित्य

पूर्णांक- 70+30=100

course ID- 240/SKT/CC202

### अधिगम उपलब्धि :-

- 1.संस्कृत मेंनाटक एवं रंगमंच की प्राचीन परंपरा है, विद्यार्थियों को नाट्य की उत्पत्ति ,विकास एवं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा
2. वर्तमान संदर्भ में संस्कृत नाट्य रंगमंच के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।3. विद्यार्थी नाटक शास्त्र में प्रदत्त अभिनय के स्वरूप का सामान्यता अवबोध प्राप्त करेंगे ।
- 4.संस्कृत भाषा में प्रयुक्त स्वर संधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

### अधिगम उद्देश्य:-

1. संस्कृत में नाटक की उत्पत्ति, विकास एवं स्वरूप का ज्ञान प्रदान कराने हेतू।
- 2.वर्तमान संदर्भ में संस्कृत नाट्य रंगमंच के स्वरूप का ज्ञान कराने हेतू।
3. संवाद एवं अभिनय कौशल में पारंगत करने हेतू।4. व्याकरणशास्त्र के ज्ञान के माध्यम से स्वर संधि का ज्ञान प्राप्त कराने हेतू।

### पाठ्यक्रम :-

#### इकाई 1 नाट्य साहित्य का इतिहास-

-कालिदास

-भास

-भवभूति

-शूद्रक

-श्रीमूलशंकरमणिकलाल 'याज्ञिक '

#### इकाई 2

दूतवाक्यम् (भास)

-कवि का परिचय

-आलोचनात्मक प्रश्न

-चरित्र चित्रण

### इकाई 3

नाट्य साहित्य पर आधारित आधारित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या- नान्दी, सूत्रधार , प्रस्तावना , प्रवेशक , विदूषक , नेपथ्य , कंचुकी , विषकम्भक , भरत वाक्य

### इकाई 4

स्वर संधि -

दीर्घ संधि , गुण संधि , यण् संधि , अयादि संधि

### दिशा -निर्देश:

-सभी इकाइयों में से 8 प्रसन्न अनिवार्य हैं। 16

-इकाई 1 से 4 में से 2 का परिचय लिखें। 10

-इकाई 2 में से चार में से 2 पद्यांश करें। 12

-इकाई 2 से 2 में से 1 आलोचनात्मक प्रश्न करें। 6

-इकाई 3 से 6 में से 3 पारिभाषिक शब्द लिखें। 12

-इकाई 4 में से 4 में से 2 संधि को उदाहरण सहित परिभाषित करें। 6

-इकाई 4 में से 8 में से 4 संधि एवं संधि विच्छेद करें। 8

### संदर्भ ग्रंथ- सूची :

-दूतवाक्यम्

-दशरूपक , धनंजय

-बृहद्अनुवाद चंद्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री

## CC-A3- संस्कृतगद्यसाहित्य

पूर्णांक 70+30=100  
course ID- 240/SKT/CC303

### अधिगम उपलब्धि :-

1. विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य साहित्य का सामान्य परिचय एवं गद्य साहित्य के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. विद्यार्थियों का संबंधित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होगा।
3. शुकनासोपदेश कादंबरी का प्रवेश द्वार माना जाता है इसमें ब्याजस्तुति एवं ब्याजनिंदा का अत्यंत मनोरम वर्णन है। इसके अध्ययन से विद्यार्थियों को काव्यात्मक तत्वों का तो ज्ञान प्राप्त होगा साथ ही तत्कालीन सामाजिक ज्ञान की भी प्राप्ति होगी
4. विद्यार्थियों को, कारकों का प्रयोग कैसे किया जाता है इसका बोध कराया जाएगा।

### अधिगम उद्देश्य :-

1. संस्कृत गद्य साहित्य का सामान्य परिचय एवं गद्य साहित्य के इतिहास का ज्ञान कराने हेतु।
2. शुकनासोपदेश के अध्ययन के माध्यम से काव्यात्मक तत्वों के ज्ञान के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु।
3. कारक, भाषा को जानने एवं प्रयोग की एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया है। कारकों के माध्यम से क्रिया की जो प्रक्रिया है, वह पूर्ण होती है कारकों का प्रयोग कैसे किया जाता है ये बोध कराने हेतु।

### पाठ्यक्रम

#### इकाई 1

- संस्कृत साहित्य का इतिहास
- रामायण का महत्व
- महाभारत का महत्व
- गीता का महत्व

#### इकाई 2 गद्य साहित्यकारों का परिचय-

- बाणभट्ट
- सुबंधु
- अंबिकादत्त व्यास
- कलानाथ शास्त्री
- कालिदास

#### इकाई 3 (क)शुकनासोपदेश (कादंबरी)

(ख) कवि परिचय, आलोचनात्मक प्रश्न, चरित्र चित्रण।

#### इकाई 4 कारक प्रकरण- कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान

### दिशा -निर्देश:

- सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य हैं। 16
- इकाई 1 से चार में से दो प्रश्न करें। 14
- इकाई 2 से चार में से दो का परिचय लिखें। 12

- इकाई 3 से चार में से दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें । 12
- इकाई 3 में से 2 में से 1 प्रश्न करें । 8
- इकाई 4 से 4 में से 2 कारक की परिभाषा उदाहरण सहित लिखें ।8

**संदर्भ ग्रंथ -सूची:**

- शुकनासोपदेश -बाणभट्ट
- कारक प्रकरण-अनुवाद चन्द्रिका
- संस्कृतसाहित्य का इतिहास- पं०बलदेव उपाध्याय

## CCA-4-संस्कृतकाकथासाहित्य

पूर्णांक70+30=100

course ID- 240/SKT/CC404

### अधिगम उपलब्धि:-

1. विद्यार्थियों को कथा साहित्य का परिचय एवं इतिहास का ज्ञान प्राप्त होगा ।
2. हितोपदेश के कथांश से विद्यार्थी जीवन में समृद्धि एवं विषमता के विरोधी समय में आत्मोन्नति का संदेश प्राप्त करेंगे ।  
आठ प्रकार के धर्म , समाज में व्यवहार रीति, दान उत्तम चरित एवं जीवन के दोषों का ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
3. संस्कृत भाषा में प्रयुक्त समास का ज्ञान प्राप्त होगा ।

### अधिगम उद्देश्य:-

1. कथा साहित्य का परिचय एवं इतिहास का ज्ञान कराने हेतू ।
2. हितोपदेश के कथांश के माध्यम से समाज में व्यवहार की रीति, दान उत्तम चरित्र एवं जीवन के दोषों का ज्ञान कराने हेतू।
3. समास का ज्ञान कराने हेतू

### पाठ्यक्रम :

#### इकाई 1

(क) संस्कृत कथा साहित्य का परिचय

(ख) कथा साहित्यकार- नारायण पंडित, विष्णु शर्मा , पं० क्षमाराव

#### इकाई 2 हितोपदेश :-

-चित्रग्रीव हिरण्यक कथा

-वृद्धव्याघ लुब्धपथिक कथा

-चित्रांग सुबुद्धि -क्षुद्रबुद्धि कथा

-जरद्वव दीर्घकर्ण कथा

#### इकाई 3 - पंचतंत्र :

1. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य

2. नीलवर्ण शृंगालः

3. शशकस्य चातुर्मास

4. न अशिष्यायोपदिश्यते ।

#### इकाई 4 समास :

-अव्ययीभाव

-द्वंद

-बहुव्रीहि

#### दिशा- निर्देश:

सभी इकाइयों से आठ वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है । 16

-इकाई 1 से 4 में से 2 का परिचय करें।12

-इकाई 2 से 6 में से 3 की सप्रसंग व्याख्या करें । 18

-इकाई 3 से 2 में से 1 कथा का सारांश करें । 6

-इकाई 4 से 3 में से दो समास की परिभाषा उदाहरण सहित करें। 8

-इकाई 4 से 10 में से 5 का समास लिखें। 10

**संदर्भ ग्रंथ -सूची:**

-हितोपदेश -नारायण पंडित

-बृहद् अनुवाद चंद्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री

-संस्कृत साहित्य का इतिहास-पं०बलदेव उपाध्याय

## CC-A5- संस्कृत साहित्य का इतिहास

पूर्णांक 70+30=100

course ID- 240/SKT/CC505

### अधिगम उपलब्धि:-

1. विद्यार्थियों को संस्कृत लौकिक साहित्य का परिचय, रामायण महाभारत का सामान्य परिचय एवं महत्व का ज्ञान होगा।
2. विद्यार्थियों को पुराणों दर्शन साहित्य, सांख्यदर्शन, योग दर्शन, वैशेषिक दर्शन, चार्वाक दर्शन का ज्ञान प्राप्त होगा।
3. विद्यार्थियों को व्याकरण शास्त्र के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होगा।

### अधिगम उद्देश्य:-

1. विद्यार्थियों को संस्कृत लौकिक एवं दार्शनिक साहित्य के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कराने हेतु।
2. व्याकरण शास्त्र के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कराने हेतु।

### पाठ्यक्रम :

#### इकाई 1

संस्कृत लौकिक साहित्य का परिचय , रामायण का परिचय , रामायण का महत्व , महाभारत का परिचय, महाभारत का महत्व

#### इकाई 2

पुराणों का परिचय , पुराणों का स्वरूप , पुराणों का महत्व , पुराणों की वर्तमान समय में सारगर्भिता

#### इकाई 3

दर्शन साहित्य का इतिहास , सांख्यदर्शन , योगदर्शन ,  
वैशेषिकदर्शन, चार्वाक दर्शन

#### इकाई 4

प्राचीन व्याकरण शास्त्र का इतिहास , अर्वाचीन व्याकरण शास्त्र का इतिहास इतिहास , पाणिनि , कात्यायन वरदराज

### दिशा- निर्देश:

सभी इकाइयों से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है। 16

इकाई 2 में से 4 में से 2 प्रश्न करें। 16

इकाई 2 में से 4 में से 2 करें। 14

इकाई 3 चार में से दो करें। 12

इकाई 4 में से चार में से दो टिप्पणी करें। 12

### संदर्भ ग्रंथ सूची-

- संस्कृत साहित्य का इतिहास , डॉ० बलदेव उपाध्याय
- संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास , रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री
- भारतीय दर्शन की रूपरेखा , डॉ० राममूर्ति पाठक , शारदा प्रकाशन प्रयागराज
- पुराणों का इतिहास , कुंवर लाल जैन व्यास शिष्य
- वैदिक साहित्य का इतिहास , डॉ० कर्ण सिंह, साहित्य भंडार मेरठ
- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास , डॉ० कपिल द्विवेदी, रामनारायण लाल विजयकुमार वेणीमाधव प्रकाशन, प्रयागराज

## CC-A6- वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय

पूर्णांक 70+30=100

course ID- 240/SKT/CC101

### अधिगम उपलब्धि:-

1. वैदिक वाङ्मय एवं संस्कृत का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. विद्यार्थियों को वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् और वेदांग साहित्य का ज्ञान प्राप्त होगा। 3. वैदिक सूक्त के माध्यम से विद्यार्थियों को तत्कालीन आध्यात्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का निर्देशन होगा।
4. विद्यार्थियों को वैदिक व्याकरण के माध्यम से स्वर, व्यंजन, प्रत्यय का बोध होगा।

### अधिगम उद्देश्य:-

1. वैदिक वाङ्मय एवं संस्कृत का ज्ञान कराने हेतू।
2. वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् और वेदांग का ज्ञान कराने हेतू।
3. वैदिक स्वर व्यंजन एवं प्रत्यय का ज्ञान कराने हेतू।

### इकाई 1

- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का संक्षिप्त परिचय।
- ब्राह्मणों का सामान्य परिचय
- आरण्यक एवं उपनिषद् का सामान्य परिचय

### इकाई 2

- अग्नि सूक्त
- विष्णु सूक्त
- संगठन सूक्त

### इकाई 3

- इन्द्र सूक्त
- हिरण्यक सूक्त
- नासदीय सूक्त

### इकाई 4

- वैदिक व्याकरण- वर्ण, स्वर, व्यंजन, प्रत्यय

\* कंठस्थ मंत्र

**दिशा- निर्देश:**

-सभी इकाइयों में से 8 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य है ।16

-इकाई 1 से 4 प्रश्नों में से 2 करें। 10

-इकाई 2 से चार मन्त्रों में से दो मन्त्रों का अनुवाद प्रसंग सहित लिखें । 10

\* इकाई 2 से 2 में से 1 सूक्त का सार लिखें । 8

•इकाई 3 से 4 में से 2 मन्त्र का अनुवाद प्रसंग सहित लिखें । 10

•इकाई 4 से 4 में से 2 पर टिप्पणी लिखें टिप्पणी। 8

\* इकाई 4 में से 2 कंठस्थ मंत्र लिखें । 8

**संदर्भ ग्रंथ-**

-ऋक्सूक्त - संग्रह

-वैदिक साहित्य का इतिहास

-वैदिक व्याकरण ,डॉ० सत्यव्रत शास्त्री